डॉ. हाशमबेग मिर्ज़ा

जन्म : 27 जुलाई 1973

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी., सेट

लेखन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 90 से अधिक शोधलेख प्रकाशित

प्रकाशित ग्रंथ

1. दक्खिनी हिंदी साहित्यकार मुल्ला वजही
2. वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और हिंदी
3. हिंदी में अनूदित भारतीय साहित्य
4. अनुवाद की भाषा एवं शब्दावली
5. पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद अंत: सम्बंध
6. भाषा-भाषांतर आणी शब्दावली
7. अधुनातन हिंदी कहानी साहित्य
8. अधुनातन हिंदी उपन्यास साहित्य
9. ऐ इमानवालों

शोध परियोजना : (UGC) की 3 लघु शोध परियोजना पूर्ण करने के उपरान्त इन दिनों (UGC) की बृहद् शोध परियोजना पर कार्य जारी है।

सम्प्रति : हिंदी विभागाध्यक्ष एवं असोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नलदुर्ग, जि. उस्मानाबाद महाराष्ट्र-413602

संपर्क : 09421951786, 09049695786

ई-मेल : drmirzahm@gmail.com

ब्लॉग : dakhiniparcham.blogspot.com

निवास : ताज अपार्टमेंट, 4 थी मंजिल, 284, शक्कर पेठ, सोलापुर-413005 (महा.)

साहित्य सागर
128/23 'आर' रवीन्द्र नगर
यशोदा नगर, कानपुर

₹ 1150.00
ISBN 978-93-82234-46-3

महाराष्ट्र में हिंदी

डॉ. हाशमबेग मिर्ज़ा

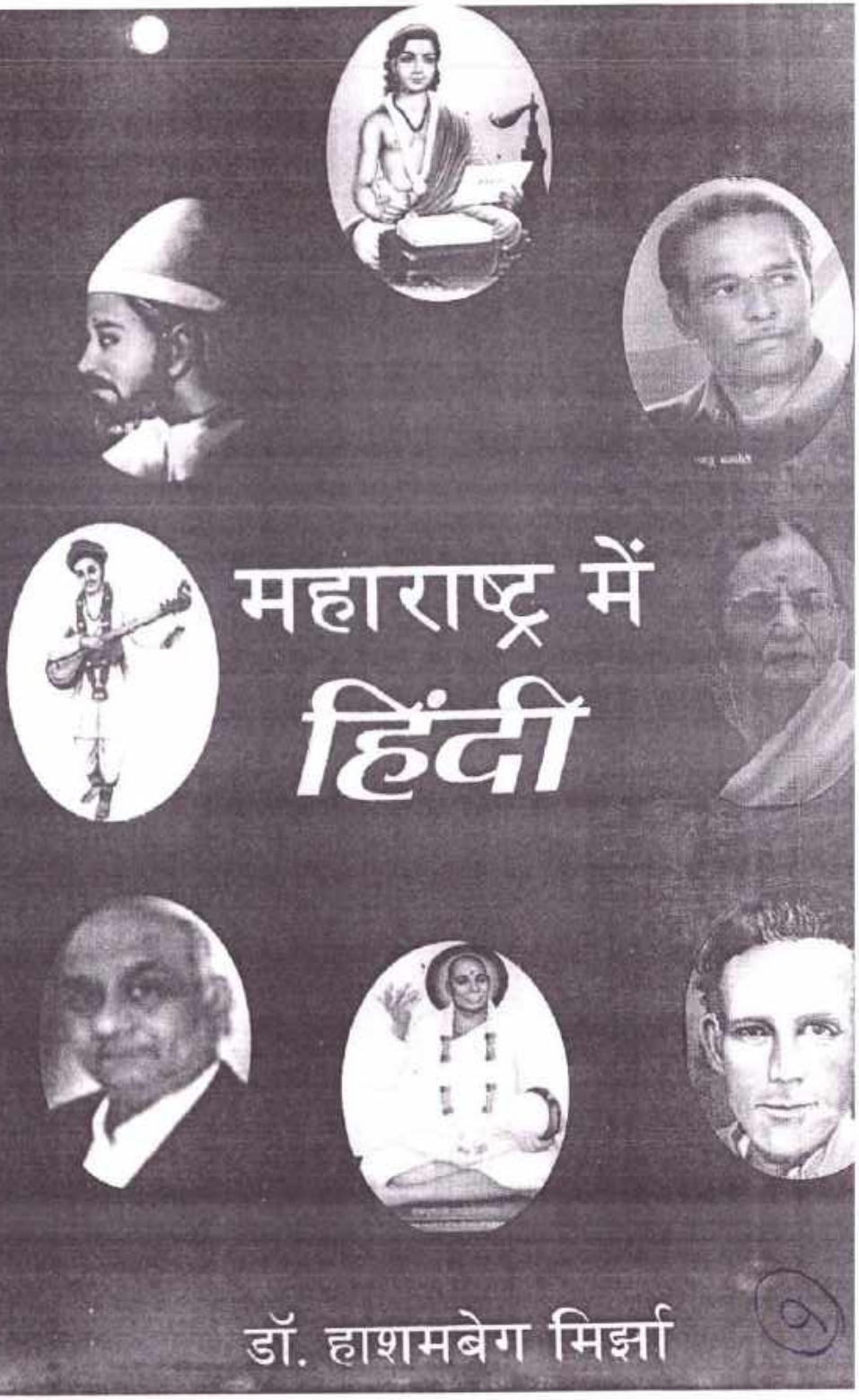

महाराष्ट्र में हिंदी

डॉ. हाशमबेग मिर्ज़ा

महाराष्ट्र में हिंदी

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

प्रकाशक
साहित्य सागर
128/23 'R' रवींद्र नगर, यशोदा नगर
कानपुर– 208 011
Mob. 9450766327, 9005904629
E-mail. p.prakashan03@gmail.com
E-mail. sahityasagar03@gmail.com

संस्करण : प्रथम, 2019

ISBN : 978-93-82234-46-3

मूल्य : 1150/–

शब्द सज्जा
रिचा ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक
साक्षी आफसेट, कानपुर

समर्पण

मेरे बड़े भाई
मिर्झा हाकिमबेग
और
बड़ी भाभी
सुलताना बेगम
को जिन्होंने अपने हिस्से की भूख को
मारकर मेरे शिक्षा की व्यवस्था की।

43.	हिंदी उपन्यास मे दलित दर्शन	डॉ. वडचकर एस.ए.	250
44.	प्रभाकर माचवे का हिन्दी सहित्य में योगदान	डॉ. शिवशेट्टे शंकर	253
45.	हिन्दी अनुवाद और वेदकुमार वेदालंकार	डॉ. विनोदकुमार वेदार्थे	257
46.	व्यंग्यकार डॉ. शंकर पुणताम्बेकर	डॉ. बेवले असाराम	262
47.	दक्षिण के प्रवेश द्वार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	डॉ. मनशेट्टी लक्ष्मी	266
48.	डॉ. जर्रा की कविताओं में व्यंग्य	डॉ. शिंदे किरण	272
49.	परिस्थिति से जूझता कवि डॉ. 'जर्रा काजी	डॉ. सय्यद शौकतअली	277
50.	महाराष्ट्र की हिन्दी पत्रिकाएँ	डॉ. मिरगणे अनुराधा	282
51.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास मे योगदान	डॉ. जमीर शेख	286
52.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास मे योगदान	डॉ. मालेशा विश्वनाथ	291
53.	हिन्दी फिल्मों का हिन्दी के विकास में योगदान	डॉ. प्रमोद पाटील	295
54.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास में योगदान	डॉ. रज्जाक शेख	299
55.	हिन्दी फिल्मों का हिन्दी के विकास में योगदान	डॉ. चव्हाण विश्वास	303
56.	प्रयोजनमूलक हिंदी के विकास में डॉ. देशमुख का योगदान	डॉ. बालाजी भुरे	307
57.	प्रयोजनमूलक हिन्दी में महाराष्ट्र के विद्वानो का योगदान	डॉ. कोटुळे बायजा	316
	संपर्क सूत्र		326

1

संत साहित्य और भारतीय संस्कृति

डॉ. रूपाली चौधरी

संत जनों की धरती है भारत माता। इस धरती पर आकर दुःख से दूर करना जो बडे–बडे अवतरण इस संसार में हुए है और जो पैगम्बर आये, दार्शनिक आये, इन लोगों ने जो धर्म बनाये वो शुध्द धर्म थे। भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर जनसाधारण के दुःख दूर करने हेतु वे आए थे, समयाचार के हिसाब से धर्म बनाये गये। लेकिन बाद में एक नई पीढी तैयार हुई उसे कहते है– धर्म मार्तंडय। ये धर्ममार्तंडय जो भी कुछ इन महानुभावों ने कार्य किए उसके बराबर विरोध में खड़े हो गये। और जो बडे–बडे संत महाभूतियाँ इस संसार में आई और उन्होंने भी जो महान कार्य किए उन कार्यो को जब हम देखते हैं तो आश्चर्य होता है कि वह सब पैसा कमाने का एक धन्धा है। कवि जिब्राल बहुत बडे सन्त हो गये हैं। उन्होंने (धर्मभीरू के) उनके खिलाफ बहुत कुछ लिखा है। अनेक संत जो संसार में आए, उन्होंने सहज मार्ग अपनाया। ज्ञानेश्वर जी थे, ये हमारे यहाँ तुकाराम जी हो गये, हमारे यहाँ नामदेव हो गये, वैसे ही नानक जी हो गये, कबीरदास जी हो गये। इन लोगों ने संसार में रहकर लोगों की सेवा की। लोगों को धर्म सिखाया। लेकिन उन सबके साथ बहुत ज्यादती की। सबको इस तरह से सताया गया, मारा गया, पीटा गया। उन्हे खाने को भी नहीं दिया। भूखा रखा गया। हर देश में महान आत्मा हुए उन्हें जगाया नहीं गया तो उनको बदनाम किया गया। उन्हीं के नाम पर मन्दिर बनाये गये, बडी–बडी संस्थाए बनाई गई और बहुत से कार्य हुए। परमात्मा का कार्य करनेवाली संस्थाएँ इस तरह से भगवान को भी बेचती है और धर्म को भी बेचती है। पैसा तो कमाती ही है, माफिया बनी हुई है। और ये सीधे साधे भोले लोग मन्दिरों में, चर्च में जाते हैं और सोचते हैं, यही परमात्मा है जिसने हमें बनाया, और उसी की भक्ति और श्रध्दा में हम लीन रहे। ऐसी एक से बढकर एक चीज हम देख सकते हैं, हम सबने नाथ द्वारा का नाम सुना होगा हर एक धर्म में एक से एक बढकर के धर्म मार्तण्ड बैठे हुए हैं जो कि माफिया है। आज जो अराजकता फैली हुई है, जिस तरह भ्रष्टाचार फैला हुआ है, जिस तरह से नैतिक मूल्य गिर गये हैं इन सबका इलाज एक ही है क्योंकि इसकी जड़ है मनुष्य। मनुष्य गिर गया इस वजह से सब चीजे गिर

47

दक्षिण के प्रवेश द्वार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

डॉ. मनशेट्टी लक्ष्मी

संवैधानिक व्यवस्था के बाद भारत ने त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार किया है। भारत के अधिकांश राज्यों में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था की गई है। भारत के महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी में अध्ययन–अध्यापन जारी है। इससे हिंदीत्तर भाषा–भाषी छात्र भी हिंदी साहित्य का अध्ययन कर रहे हैं। महाराष्ट्र में भी आज हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में सर्वसंमत रूपसे स्वीकार किया गया हैं। महाराष्ट्र के संत–नामदेव, चक्रधर स्वामी, ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ, संत तुकाराम, समर्थ रामदास, संत गुलाबराय महाराज, स्वामी भोगानंद, संत तुकडोजी आदि ने मराठी के साथ–साथ हिंदी में भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। अर्थात, मध्यकाल से ही हिंदी साहित्य में महाराष्ट्र के साहित्यकारों का योगदान दिखाई देता है। महाराष्ट्र की भौगोलिक रचना भी इस तरह की है कि वह (महाराष्ट्र) उत्तर भारत और दक्षिण भारत के मध्य आता है। इसलिए इसे उत्तर तथा दक्षिण का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। जितने भी सूफी संत उत्तर से दक्षिण की ओर गए हैं, वे महाराष्ट्र से होकर गुजरे हैं। प्राचीन काल से ही महाराष्ट्र में राष्ट्रीयता की परम्परा दिखाई देती है। छत्रपति शिवाजी राष्ट्रीयता के द्योतक माने जाते है। महात्मा गांधी को सर्वाधिक अनुयायी महाराष्ट्र से ही मिले थे।

महाराष्ट्र को सामाजिक सुधार आंदोलन का केंद्र माना जाता है। महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, न्या. रानडे, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आदि महामानव महाराष्ट्र भूमि में जन्मे थे। आधुनिक काल में महाराष्ट्र में हिंदी का प्रचार–प्रसार अधिक हुआ। विनोबा भावे, आ. काका कालेलकर, दादा धर्माधिकारी, अनंत गोपाल शेवडे, मधुकरराव चौधरी हिंदी के प्रमुख प्रचारक माने जाते हैं। हिंदी प्रचार–प्रसार की यह परम्परा आज भी जारी है। आधुनिक युग में ऐसे भी कई महाराष्ट्र के साहित्यकार हैं जो हिंदी भाषा और साहित्य को समृध्द बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें अनंत गोपाल शेवडे, डॉ. शंकर पुणतांबेकर, श्रीमती

मालती परूलेकर, श्रीमती मालती जोशी, श्रीपाद जोशी, डॉ. दामोदर खडसे, आदि उपन्यासकारों का उल्लेख किया जाता है। महाराष्ट्र के आधुनिक कवि हैं– आरतीकर काकडे, सुरेखा गोडबोले, प्रभाकर माचवे, वसंत देव, डॉ. र. शं. केलकर, भृंग उपकरी, दिनकर सोनवलकर, निर्मला चौहान, डॉ. बलभीमराव गोरे, ओमप्रकाश शरीर, डॉ. काझी सत्तार जरी, डॉ. पद्मा पाटील महाराष्ट्र के कई कहानीकार हैं। जिनका हिंदी साहित्य को समृध्द कराने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें प्रमुख कहानीकार हैं– यमुना शेवडे, जोत्स्ना देवधर, विलास गुप्ते मुरलीधर जगताप, श्री गो. प. नेने, प्रभाकर माचवे। महाराष्ट्र के कुछ आलोचक भी हैं। जिन्होंने हिंदी आलोचना का क्षेत्र काफी विस्तृत किया है। इनमें प्रमुख महाराष्ट्र के कुछ हिंदी आलोचक भी हैं। इनमें प्रमुख आलोचक हैं– गजानन माधव मुक्तिबोध, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. चंद्रभानु सोनवणे, भगवानदास वर्मा, डॉ. अंबादास देशमुख, डॉ. अशोक कामत, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ. भ. ह. राजूरकर। महाराष्ट्र के साहित्यकारों ने अनुवाद विधा में भी अपना सराहनीय योगदान दिया है। डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, वेदकुमार वेदालंकार, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे डॉ. चंद्रभान सोनवणे, डॉ. सुनील कुमार लवटे, श्री. वसंत देव, डॉ. विद्या विलको आदि महाराष्ट्र के प्रमुख अनुवादक माने जाते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी, साहित्यशास्त्र में भी कई महाराष्ट्रीयन साहित्यकारों का योगदान रहा है।

हिंदी–साहित्य में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का योगदान

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का हिंदी साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान, संगठन, अनुवाद, आलोचना और कुछ मात्रा में सृजनात्मक लेखन आदि सभी क्षेत्रों को समृध्द किया हैं। उनका लेखन–कार्य अविरत गति से अब तक भी जारी है। उनका लेखन प्रगल्भ प्रतिभा एंव सामाजिक अनुभूति की यात्रा है। इनके संबंध में डॉ. अंबादास देशमुख लिखते हैं– "एक सशक्त लेखक के रूप में व हिंदी संसार में प्रस्तुत हुए हैं। डॉ. रणसुभे की साहित्यक काव्य कृतियों में उनके मानवीय दृष्टिकोण एवं उनके विचारों की गहराई तक पहुँचकर एक संवेदनशील कलाकार के मासूमियत भरे दिल की धड़कन को पहचानना है तो उनके जीवन से जुड़ी बातों को जानना जरूरी है।"[1] डॉ. रणसुभे का लेखन विविधात्मक है। वे एक महान युगदृष्टा माने जाते हैं।

डॉ. रणसुभे का जीवनवृत्त : डॉ. रणसुभे ने हिंदी साहित्य जगत में यशस्वी चहल कदमी करते हुए अपने अस्तित्व की अमिट छाप छोड़ी है। तथा अपनी एक अलग पहचान बनायी है। उनका जन्म 7 अगस्त, 1942 को पुराने हैदराबाद रियासत के जिला गुलबर्गा में हुआ। वहाँ की एक श्रमिक बस्ती में उनका जन्म हुआ, वहीं उनका बचपन व्यतीत हुआ। प्राथमिक शिक्षा से लेकर

अमानवीय व्यवहार है इसका दर्पण यह आत्मकथा है।"[6]

डॉ. रणसुभे ने अक्करमाशी (शरण कुमार लिंबाले) का भी अनुवाद किया है। उन्होंने 'अक्करमाशी' शब्द हिंदी में रूढ किया। जिसका अर्थ है– अवैध संतान। एस. जे. गायकवाड के अनुसार– "यह दलित आत्मकथा समग्र मनुष्य जीवन को दहला देनेवाली आत्मकथा हैं। इसमें सवर्ण और अवर्ण जाति के स्त्री पुरुष के अवैध संबंधों से जन्मी संतान शरणकुमार लिंबाले का समस्या ग्रस्त जीवन अभिव्यक्त हुआ है।"[7] इस अनूदित कृति द्वारा अनौरस संतति की समस्या को दर्शाया गया है। रणसुभे जी ने उठाईगीर (लक्ष्मण गायकवाड) इस आत्मकथा का भी 'उचक्का (उचल्या)' नाम से अनुवाद किया है। इसमें समाजव्यवस्था एवं वर्णव्यवस्था से पीड़ित मनुष्य जीवन का अंकन है। इसमें मानव जीवन की त्रासदी को अंकित किया गया हैं। एक पीड़ित कार्यकर्ता की संघर्षमयी गाथा को व्यक्त किया गया है। लक्ष्मण गायकवाड के अनुसार– "यह आत्मकथा वास्तव में एक कार्यकर्ता का मुक्त चिंतन है। इस कारण इस आत्मकथा का साहित्यिक मूल्यांकन करने की अपेक्षा समाजशास्त्रीय मूल्यांकन हो यह अपेक्षा है।"[8]

डॉ. रणसुभे ने आत्मकथा के अलावा 'साक्षीपुरम' नाटक, छः दलित कहानियाँ, 'हिंदू' नामक उपन्यास तथा अन्य वैचारिक लेखन आदि का भी हिंदी में अनुवाद किया है। इस प्रकार रणसुभे जी ने अनुवाद को साधना के रूप में स्वीकार किया है। इसी साधना के बदौलत उनका अनुवाद सफल रहा है। अतः रणसुभे जी को एक सफल अनुवादक माना जा सकता है।

आलोचक : डॉ. रणसुभे : आलोचना के क्षेत्र में रणसुभेजी का नाम सराहनीय माना जाता है। आलोचना लेखन से उनकी प्रतिभा, अध्ययनशीलता, तथा मौलिक समीक्षा–दृष्टि के दर्शन होते हैं। उन्होंने सात रचनाओं की आलोचना की हैं– कहानीकार कमलेश्वर : संदर्भ और प्रकृति, 'कहानीकार अज्ञेय : संदर्भ और प्रकृति, हिंदी उपन्यास : विविध आयाम, देश विभाजन और हिंदी कथा–साहित्य, हिंदी साहित्य का अभिनव इतिहास, साहित्यशास्त्र तथा आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास।

'कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति' में रणसुभेजी ने कमलेश्वर की बारह कहानियों की आलोचना की है। 'कहानीकार अज्ञेय संदर्भ और प्रकृति' में अज्ञेय जी की कहानियों की आलोचना की हैं। 'हिंदी उपन्यास विविध आयाम' में हिंदी की महत्वपूर्ण सोलह उपन्यासों पर आलोचना की है। 'देश विभाजन और हिंदी कथा–साहित्य' में रणसुभे जी ने देश विभाजन से संबंधित जो कथा साहित्य लिखा गया है, उस पर अपने अलोचनात्मक विचारों को स्पष्ट किया है। 'साहित्यशास्त्र' में भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र की अवधारणा को व्यक्त किया गया है। 'विभाजन' में रीतिकाल के विभाजन–रीतिबध्द, रीतिसिध्द रीतिमुक्त–पर आपने आलोचनात्मक विचार रखे हैं। 'आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास' यह भी रणसुभे की आलोचनात्मक कृति है। इस कृति के बारे में डॉ. रणसुभे लिखते हैं– "अपनी मातृभाषा की आधुनिक प्रवृत्तियों का परिचय राष्ट्रभाषा के अध्येयताओं को करा देने के उद्देश्य से ही यह प्रवृत्ति लिखी है।"[9] इन कृतियों से स्पष्ट होता है कि अलग–अलग विषयों पर रणसुभे जी ने लेख लिखा है। इससे उनकी आलोचना दृष्टि देखने को मिलती है। जिससे उन्हें एक लोकप्रिय आलोचक माना जा सकता है।

रणसुभेजी ने वैचारिक लेखन, फुटकल लेखन, सृजनात्मक लेखन तथा सम्पादन लेखन भी किया है। इससे उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय मिल सकता है।

निष्कर्ष : यह कहा जा सकता है कि, रणसुभेजी ने जो भी लेखन कार्य किया हैं वह मौलिक तथा उद्देश्यपूर्ण रहा है। वैचारिक लेखन, आलोचना लेखन, सृजनात्मक लेखन, सम्पादन लेखन में वे अपना एक अलग स्थान रखते हैं। उन्हें सबसे अधिक लोकप्रियता अनुवादक के रूप में प्राप्त हुई है। उनके द्वारा अनूदित कृतियो ने उपेक्षित जाति के दुःख, दर्द समाज के सम्मुख रख दिया है। महाराष्ट्र के हिंदी में उनका सराहनीय योगदान रहा है। उन्हें हिंदी की सबसे बडी उपलब्धि कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रशंसनीय रहा है। उन्हें दक्षिण के प्रवेश द्वार कहा जाता है।

संदर्भ

1. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व– डॉ. मजीद शेख, डॉ. अंबादास देशमुख की भूमिका से
2. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. मजीद शेख – पृ. 21
3. वही, पृ. 31
4. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे – भूमिका से
5. गौरव ग्रंथ' प्रा. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, अक्षरशती चिंतन वीथियाँ – डॉ. सुरेश माहेश्वरी – पृ. 25
6. हिंदी में अनूदित भारतीय साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) में, डॉ. सन्मुख नागनाथ मुरुकटे का लेख, पृ. 30
7. वही, पृ. 172
8. उचक्का (लक्ष्मण गायकवाड) अनुवाद डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे – लक्ष्मण गायकवाड की भूमिका से
9. आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास–डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, पृ. 5.

डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे

जन्मतिथि : 05 मई 1980

जन्मस्थान : कोरियाल, पोस्ट- सावली, ता. कमलनगर, जि. बिदर, राज्य- कर्नाटक-585417

शिक्षा : बी.ए., एम.ए. (हिन्दी), बीएड., एम.एड. गुलबर्गा विश्वविद्यालय, कलबुर्गी (कर्नाटक) से उपाधियाँ प्राप्त कर लिया है। एम.फिल. मदुरै कामराज विश्वविद्यालय मदुरै (तमिलनाडु) से और पीएच.डी. कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, नलदुर्ग, जिला- उस्मानाबाद, डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) से उपाधि पायी।

संगोष्ठी : राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागी एवं शोध प्रपत्र का पठन प्रस्तुत किया। साथ ही विषय प्रवर्तक के रूप में भी राष्ट्रीय संगोष्ठी का सत्र संभाला है।

रेडियो : दस मिनट के तीन बार प्रोग्राम प्रस्तुत किये। जिनमें अलग-अलग विषयों पर भाषण दिया।

आकाशवाणी ऑल इंडिया रेडियो, स्टेशन कलबुर्गी (गुलबर्गा) कर्नाटक

कार्य अनुभव : जूनियर कॉलेज से पढ़ाने की शुरुआत की और अनेक संस्थाओं में काम किया, जिनमें मुरारजी देसाई, नवोदय महाविद्यालय, सरकारी महाविद्यालय यादगीर सरकारी महाविद्यालय बिदर और सरकारी महाविद्यालय (स्वायत्त) कलबुर्गी कर्नाटक राज्य। इन आदि संस्थाओं में काम करते हुए साहित्यिक रुचि रहने के कारण 2014 में यशपाल का रचना संसार, 2020 में हिन्दी साहित्य के विविध आयाम पुस्तक प्रकाशित है। हायर प्राइमरी के शिक्षकों को ट्रेनिंग भी दिया। साहित्यिक प्रेरणा डॉ. हाशमबेग मिर्झा सर जी से प्राप्त हुई है। यह मेरी दूसरी पुस्तक प्रकाशित है। मेरे आलेख अनेक पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों में प्रकाशित है। कुछ कविता और अनूदित साहित्य भी प्रकाशित हैं।

स्थायी पता : डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे, मु. कोरियाल, पो. सावली, ता. कमलनगर,
जि. बिदर-585 417, कर्नाटक राज्य
मो. 9008440921, 6364556721
Email : nagnathbhende@gmail.com

पूजा पब्लिकेशन
नौबस्ता, कानपुर-208021
Mob.: 09415909291, 9839991140
E-mail : pujapublication0512@gmail.com

₹ 215.00
ISBN 978-93-83171-47-7

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में विविध स्वर ✸ सं. डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे

समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में विविध स्वर

संपादक
डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे

ISBN : 978-93-83171-47-7

पुस्तक : समकालीन हिंदी कथा साहित्य में विविध स्वर
संपादक : डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे
प्रकाशक : पूजा पब्लिकेशन
6 बी, बौद्ध नगर, नौबस्ता, कानपुर 208021
मो- 9415909291, 9653096899
Email : pujapublication0512@gmail.com
संस्करण : प्रथम, 2020
©
: लेखकाधीन
मूल्य : 215. 00 (दो सौ पन्द्रह रुपये मात्र)
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : आर्यन प्रिंटर्स, नई दिल्ली

Samkaleen Hindi Katha Sahitya Me Vividh Swar
Editor : Dr. Nagnath Shankarrao Bhende
Price : Two Hundred Fifteen Rs. Only.

समर्पण

पूज्यनीय
माता-पिता
को
सादर

लेखक

के नाम पर दो शब्द लिखकर उनके अमूल्य योगदान को सीमित (कम) नहीं करना चाहता हूँ। बल्कि इन सभी विद्वानों के प्रेम और स्नेह की मजबूत डोर में बंधे रहना चाहता हूँ।

इस पुस्तक को पूर्णत्व की ओर ले जाने का श्रेय और सहयोग हमारी शिक्षण संस्था के सभी पदाधिकारियों के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से ही संभव हुआ है। इसके निर्माण में हमारे जिन-जिन स्नेही, मित्रों और हितचिंतकों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है, उनके प्रति मैं हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक में छपे विचार आलेखकर्ताओं के अपने विचार हैं। उन विचारों के साथ संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए पूजा पब्लिकेशन, कानपुर (उत्तर प्रदेश) के श्री बृजेश कुमार पांडेयजी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

अंत में मैं मेरे परिवारजनों का चिर ऋणी हूँ। सबसे बढ़कर मुझे जन्म देने वाले माता-पिताजी का ऋण कभी नहीं चुका सकता हूँ, उनके आशिर्वाद से यह कार्य सम्पन्न हुआ। इसका चिर ऋणी हूँ। प्रो. पस्मिला अम्बेकर मैडम जी, डॉ. गणेश पवार सर जी डॉ. राजू एस. बागलकोट मैडम जी का डॉ. हाशमबेग मिर्झा सर इन सभी का मुझे आशीर्वाद प्राप्त है।

स्थान : कलबुर्गी
दिनांक : 30 जुलाई, 2020

संपादक
डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे

अनुक्रम

1.	जूठन आत्मकथा में बेरोजगार प्रथा **डॉ. नागनाथ शंकरराव भेंडे**	09
2.	'द्रोणाचार्य एक नहीं', दलित साहित्य में कला क्षेत्र **प्रा. डॉ. हाशमबेग मिर्झा**	12
3.	स्त्री, समाज और साहित्य **डॉ. गोखले पंचशीला**	15
4.	रत्ना की बात – एक विश्लेषण **डॉ. लक्ष्मण भोसले**	18
5.	समकालीन लेखिकाएँ और [illegible] **डॉ. विलास अंबादास साळुंके**	23
6.	आत्मकथा का उद्भव और विकास **प्रा. वेंकटेश हिबारे**	26
7.	भारतीय नारी पर पाश्चात्य प्रभाव **सह शिक्षक मल्लिकार्जुन नड्डविनकेरी**	29
8.	'आपका बंटी' उपन्यास में चित्रित नारी मनोविज्ञान **डॉ. लक्ष्मी किशनराव मनशेट्टी**	31
9.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध स्वर **डॉ. बालाजी सोंपुरे**	34
10.	'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा का चिन्तन **डॉ. किरण गोपाल शिंदे**	38
11.	दोहरा अभिशाप **डॉ. रवीन्द्र बनसोडे**	41
12.	हिन्दी महिला आत्मकथाओं का सामाजिक जीवन **डॉ. नरेन्द्र रोहिदास शिंदे**	44

लेकिन पुरुष वर्ग स्त्रियों की उन्नति को पचा नहीं पा रहा है। साथ ही आज स्त्री को महत्व कम होने लगा है। इसका मूल कारण है कि आज का [illegible] जीवन [illegible] है। जहाँ पर मनुष्य से ज्यादा महत्व मशीन को मिलने लगा है। इसी कारण आज कोई रिश्ते-नाते अपनापन यह सब बातें लुप्त हो गई हैं। [illegible] है इस संदर्भ में प्रा. जयराम श्री सूर्यवंशी लिखते हैं

"मुक्तनारी के नाम पर अत्यधिक खुलापन, विवाह संस्था के प्रति अनास्था, बिन ब्याही माँ, क्लब लाईफ, धूम्रपान, शराबखोरी, आगे जाने के लिए गलत तरीका का इस्तेमाल आदि से स्त्री इस कथित समाज में पुरुष शोषण का शिकार होती है और कई तरह के गुप्त रोगों का शिकार पर तो दूसरी तरफ पुरुष भी अपनी बातों को व्यक्त करता है कि आज की स्त्री के सामने पति-पिता, बेटा-बेटी बेमतलब होते जा रहे हैं। इसका कारण कुछ औरतों को इतनी स्वच्छंदता और खुला जीवन जीने की आदी हो गई है।

वे अपने जीवन के अंतिम सांस तक जिन्दगी का मजा लेना चाहती हैं, लेखक सूर्यकान्त नागरजी ने अपनी कहानी में लिखते हैं-"कहानी की स्त्री पात्र मीनू और उसका पति अधीर दोनों नौकरी करते हैं। मीनू स्वभाव से बहुत स्वछंदतावादी और खुलापन, स्वीकार वाली औरत है। उसकी नजर में पति अधीर सास, ससुर, बच्चे आदि की कोई कीमत नहीं है। विवाह के बाद जब अधीर अपना स्कूटर अपने छोटे भाई के हवाले करता है तो गुस्से में आकर मीनू कहती है-"एक दिन तुम मुझे भी अपने भाई के हवाले कर देना" इसके अलावा दोनों के बीच दरार पैदा होती है। मीनू भी अपना संबंध अपने बॉस के साथ अक्सर चलता है। इधर घर के सारे कामकाज की देखभाल मीनू का पति अधिक संभालता है। जब अधीर को घर का काम करने पर अहसास होने लगता है। कि वह औरत बनता जा रहा है, अर्थात् 'बकरा' बना है सभी रिश्तेदार को टेप करके पति के खोटे सिक्के बनाकर सुनाती है। इस प्रकार से आज की नारी में नशापन भी आमवात हो गई है। पाश्चात्य सभ्यता का आधुनीकरण हमारी भारतीय औरतों ने भी शराब पी रही है।

संदर्भ

1. अनुसंधान त्रैमासिक शोध पत्रिका अक्टूबर-2012 मार्च 2013 पृ. 37
2. डॉ. सूर्यकांत नागर, हंस पत्रिका अप्रैल 2010
3. अनुसंधान त्रैमासिक शोध पत्रिका अक्टूबर 2012 मार्च 2013, पृ. 42

सह शिक्षक
श्री मोराजी देसाई पाठशाला
अर्जुणगी अफजलपुर ता. कलबुर्गी
जिला- कर्नाटक राज्य

■■■

8.

आपका बंटी उपन्यास में चित्रित नारी मनोविज्ञान

डॉ. लक्ष्मी किशनराव मनशेट्टी

आधुनिक गद्य विधाओं में उपन्यास के महत्वपूर्ण स्थान है। विषय-वस्तु की दृष्टि से हिन्दी में ढेर सारे मनोविज्ञानवादी, साम्यवादी ऐतिहासिक आंचलिक एवं प्रयोगवादी उपन्यास लिखे गये, इनमें मनोविश्लेषणवादी उपन्यास का संबंध मानव मन से है। हिन्दी मनोविश्लेषणवादी उपन्यासो पर मनोविज्ञानवाद के अविष्कारकर्ता फ्रायड तथा डॉ. युगर का प्रभाव दिखाई देता एवं मनोवैज्ञानिकवाद के अनुसार अचेतन मन में मनुष्य के सभी उन्मुख वासनाएं रहती है। वासनाओं के दमन से मानसिक रचना बिखर जाती है। व्यक्तिहीनता की भावना से पीड़ित रहता है। हिन्दी मनोविश्लेषणवादी (मनोवैज्ञानिक) उपन्यासों पर इन प्रवृत्तियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आता है। मनोविश्लेषणवादी एवं अज्ञेय का सराहनीय योगदान रहा है। मन्नू भंडारी ने भी विज्ञान पर आधारित आपका बंटी नामक उपन्यास लिखा है। जैनेन्द्र कुमार के परख सुनीता-त्यागपत्र, कल्याणी सुखदा, विवर्त एवं व्यक्ति आदि मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पात्रों के मन की उलझनों, गुत्थियों एवं शंकाओं का निरूपण किया है। [illegible] इन उपन्यासों में कुण्ठग्रस्त अतृप्त एवं आत्मपीड़ा की [illegible] मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। इसलिए जोशी के सन्यासी [illegible] इन उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता दृष्टिगोचर होती है। [illegible] मानव मन की कुण्ठाओं एवं आंधियों का विश्लेषण किया है। [illegible] 'नदी के द्वीप', अपने [illegible] मनोवैज्ञानिक को प्रस्तुत किया है। मन्नू भंडारी द्वारा लिखित उपन्यास 'आपका बंटी' मनोविज्ञान की दृष्टि से हिन्दी मनोविश्लेषणवादी उपन्यास की एक महान उपलब्धि मानी जा सकती है।

'आपका बंटी' मनोविज्ञान से ओतप्रोत उपन्यास है। हिन्दी साहित्य का यह बेजोड़ उपन्यास एवं अनूठा मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। जिसका प्रकाशन सन् 1973 में हुआ। इसमें बाल मनोविज्ञान के साथ-साथ नारी मनोविज्ञान का चित्रण किया

21वीं सदी का
संक्रमणकालीन
नाट्य साहित्य

संपादक
डॉ. विजय गणेशराव वाघ

A. R. PUBLISHING CO.
Publishers & Distributors
1/11829 Panchsheel Garden, Naveen Shahdara
Delhi-110032, Mob. 9968084132, 7982062594
e-mail: arpublishingco11@gmail.com

21वीं सदी का संक्रमणकालीन नाट्य साहित्य

संपादक : डॉ. विजय गणेशराव वाघ

21वीं सदी का संक्रमणकालीन नाट्य साहित्य

संपादक

डॉ. विजय गणेशराव वाघ

ए. आर. पब्लिशिंग कंपनी
1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : +91 9968084132, +91 7982062594
e-mail : arpublishingco11@gmail.com

21VIN SADI KA SANKRAMANKALEEN NATYA SAHITYA
Edited by Dr. Vijay Ganeshrao Wagh

ISBN : 978-93-88130-89-9
Criticism

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : 395.00

साज-सज्जा : शेष प्रकाश शुक्ल
मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक व लेखक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पेक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

मेरी लाडली पुत्री देवश्री
की मुस्कान को

हैआदमी अर्थहीन, असंगत, अकेला, अजनबी, निर्वासित, बेगाना एक ही सिक्के के ये कितने नाम है?''[10] स्वातंत्र्योत्तर वर्षों के दबाव-तनाव के कारण मनुष्य न केवल जरूरतों का ढ़ेर बनकर रह गया, अपितु अपनी पहचान भी खो बैठा है। फलतः वह अजनबी और आत्मनिर्वासित भी हो गया है। विश्वजीत का उपर्युक्त कथन इसी सच्चाई को प्रस्तुत करता है। आज वर्तमान युग में यह अकेलापन व्यक्ति को मिला एक अभिशाप है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति भोगने के लिए विवश है। इस प्रकार विष्णु जी ने व्यक्ति के अकेलेपन एवं उससे उत्पन्न व्यथा को सूक्ष्मता से चित्रित किया हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'टूटते परिवेश' नाटक की जाँच-परख करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि, यह नाटक आज भी प्रासंगिक हैए परंतु आज कहीं-न कहीं इन स्थितियों में बदलाव की आवश्यकता हैए संयुक्त परिवार को टिकाए रखने की आवश्यकता है। नयी-पुरानी पीढ़ी में वैचारिक संतुलन लाने की जरूरत है। वृद्धों को उनके अंतिम दिनों में मानसिक आधार देने की, उनके अकेलेपन को कम करने की जरूरत है। इस पारिवारिक विघटन तथा मानसिक संघर्ष को खत्मकरने की आवश्यकता है। भावनाओं एवं विचारों का मेल कराने की अब आवश्यकता आन पड़ी है। तभी संयुक्त परिवार टिक सकेंगे और इन समस्याओं से हम निजात पायेंगे। यही वर्तमान समय की माँग है, अन्यथा हमें भविष्य में बहुत ही भयावह स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। इसप्रकार की स्थितियां अधिकतर पढ़े-लिखे लोगों उत्पन्न करते हैं, जिन्हें कम करना अब उनका ही कर्तव्य है। विष्णु जी भी इस नाटक में परिवर्तित मानसिकता एवं उसके स्वीकार की ओर इंगित करते हैं।

संदर्भ

1. विष्णु प्रभाकर, संपूर्ण नाटक, भाग-1, टूटते परिवेश, पृ. 32-33
2. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग-2, टूटते परिवेश, पृ. 49
3. वही, पृ. 49-50
4. वही, पृ. 32
5. वही, पृ. 32
6. वही, पृ. 32
7. वही, पृ. 241
8. वही, पृ. 33
9. वही, पृ. 234-235
10. वही, पृ. 230
11. डॉ. बी.एस. विवेकानंदन पिल्लै, विष्णु प्रभाकर के नाट्य साहित्य में सामाजिक चेतना
12. डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा, समकालीन हिंदी नाटक एवं नाटककार
13. डॉ. वंदना मिश्र, विष्णु प्रभाकर के नाटकों में मानवीय संवेदना

9. संत तुकाराम के जीवनगाथा की नाटकीय अभिव्यक्ति 'अभंगगाथा'

–डॉ. लक्ष्मी मनशेट्टी

आधुनिक नाट्य साहित्य में नरेंद्र मोहन का जाना-माना नाम है। 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं 21वीं सदी के प्रथम तथा द्वितीय दशक में उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया है। नरेंद्र मोहन का जन्म 30 जुलाई, 1935 में लाहौर में हुआ। हिंदी और पंजाबी भाषा पर उनका प्रभुत्व था। 1952 में उन्होंने अंबाला (हरियाणा) से मैट्रिक परीक्षा प्राइवेट तौर पर उत्तीर्ण की। उन्हें स्कूल के जीवन से ही लिखने का शौक था। जी.एम.एन कॉलेज में उन्होंने दाखिला लिया। वे कथा, कविता और साहित्यिक लेख लिखते रहे। पंजाब यूनिवर्सिटी से बी.ए. तथा एम. ए. हिंदी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कॉलेज पढ़ते-पढ़ते कविताएं एवं पत्र-पत्रिकाओं में लेखन करते रहे। 1959 को लुधियाना के एक कॉलेज में व्याख्याता पद पर नियुक्ति हुई। जालंधर, रोपड़, हिसार के कॉलेज में कई वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में कार्यभार संभाला। नरेंद्र मोहन कई कविता लिखते थे। उनके कई कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। कई कहानियों का उन्होंने संपादन-कार्य किया है। 'इस हादसे में', 'शाम ना होने पर', 'हथेली पर अंगारों की तरह' तथा अन्य कविता संग्रह उन्होंने लिखे। कई संपादकीय ग्रंथ भी लिखे हैं।

नाट्य साहित्य में नरेंद्र मोहन का अनूठा योगदान रहा है। सींगधारी (1988), कहै कबीर सुनो भाई साधो (1980), कलंदर (1991), नो मैंस लैंड (1994), अभंग गाथा (2000), मिस्टर जिन्ना (2005) मंच अँधेरे में (2009) आदि नरेंद्र मोहन के सुप्रसिद्ध नाटक रहे हैं। इन सभी नाटकों का सफल मंचन हुआ है। उनके नाटक मंचन के बारे में गुरुचरण सिंह भूमिका में लिखते हैं, ''नाट्य लेखन के समय नरेंद्र

नरेंद्र मोहन ने तुकाराम के अभंगों पर 'अभंग गाथा' नाटक का लेखन, मंचन एवं प्रकाशन किया है।जिसका प्रकाशन सन 2000 में हुआ है। तुकाराम का व्यक्तिगत जीवन, उनकी अभंग सृजनात्मकता तथा उनकी अद्भुत आत्मानुभूति इन तीनों को नाटक में इस कुशलता से प्रक्षेपित किया गया है। जिससे तुकाराम के समकालीन सामाजिक संघर्षों को ही नाटक में केंद्रीय स्थान प्राप्त हो गया है।

'अभंग गाथा' नाटक तीन अंकों में विभाजित है। नाटक का आरंभ कीर्तन मंडली के अभंगों से होता है। संत तुकाराम का सारा जीवन अभंग में बिता है। इसी कारण जहां तुकाराम का उल्लेख आता है वहां अभंग का होना अत्यावश्यक है। उनके अभंग समाज के सारे परिस्थिति को बयाँ करते हैं। उनके सुप्रसिद्ध अभंगों की कुछ पंक्तियाँ :

''टिळा टोपी घालुनी माळ,
म्हणती आम्ही साधु।
दया धर्म चित्ती नाही,
ते जाणावे भोंदू।
कलियुगी घरोघरी,
संत झाले फार।
वितिभरी पोटासाठी,
हिंडती दारोंदार।''[6](मराठी अभंग)

'अभंग गाथा' का आरंभ कीर्तन से किया गया है। सूत्रधार एवं कोरस का कार्य कीर्तन मंडली करती है। नाटक का श्री गणेशा इस अभंग से होता है :

''आम्हा घरी धन,
शब्दाचीच रत्ने।''

इस नाटक में चित्रित पात्र सदाशिव, तानाजी, दामोदर क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। नाटक के प्रथम दृश्य में हिंदू-मुसलमानों के दंगे, फसाद को दिखाया गया है। रास्ते में लड़ाई-झगड़े होने का दृश्य है। एक ओर नाटक मंडली गा रही है। तीनों वारकरी सदाशिव, तानाजी, दामोदर भीड़ को हटाने का प्रयास करते हैं। इसी बीच 'राजा' की सवारी वहां से गुजरती है। वारकरी रास्ते से हटने का नाम नहीं लेते, तब सदाशिव एक वारकरी के पेट में छुरा घुसाता है। अर्थात, इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज के अंतर्गत उच्च वर्ग एवं निम्न लोगों के बीच संघर्ष सदियों से चला आ रहा है। कोई भी राजा या शासन इस संघर्ष को रोकने में कामयाब नहीं हो पाया है।

द्वितीय दृश्य में चारों ओर युद्ध का माहौल दिखाई देता है। चारों ओर से सेनाओं

के आने की आवाजें सुनाई देती है। इसमें साधारण लोगों की काफी जानें चली जाती है। संत तुकाराम जब एक आदमी की लाश को देखता है, तो वे अपना होश खोकर मूर्तिवत बैठ जाता है। रुखमा जब विष्णुदास नाम्या का अभंग गाती है, तब तुकाराम चेतना अवस्था में आ जाते हैं। संत तुकाराम के गृहस्थ जीवन के बारे में निशिकांत मिरजकर लिखते हैं, ''तुकाराम का गृहस्थ जीवन दमै की मरिज ज्येष्ठ पत्नी रुखमा है, जो पति के भविष्य को समझती है। कनिष्ठ पत्नी जीजाई है जो सदैव अभावग्रस्त और गृहस्थ जीवन के बोझ से त्रस्त झुँझलाई हुई है।''[7] संत तुकाराम की विट्ठल भक्ति एवं तुकाराम-मंबाजी का संघर्ष इस दृश्य में दिखाया गया है।

तृतीय दृश्य में भयंकर अकाल का दृश्य विधान है। इस दृश्य में भूखमरी का करुणादायी वर्णन है।सब लोग भूख के मारे तड़प रहे हैं। बिना अन्न-जल के सब छटपटा रहे हैं। आक्रोश कर रहे हैं। तुकाराम कर्कश पत्नी जीजाई की परवाह न करते लोगों को घर का अनाज देता है। भूख-प्यास से अकुलाती, तड़पती रुखमा प्राण त्याग देती है। इससे सिद्ध होता है कि तुकाराम महाराज का जीवन बहुत ही अभाव में बिता था। फिर भी वे विट्ठल भक्ति में तल्लीन रहा करते थे।

चतुर्थ दृश्य में संत तुकाराम बहुत ही क्षीण, संवेदना शून्य एवं भावविह्वल दिखाई देते हैं। संत तुकाराम कर्ज में डूबकर मंबाजी के चंगुल में फंस जाते हैं। अंत में तुकाराम दर-दर पहाड़ियों पर भटकने का दृश्य है। यहीं पर प्रथम अंक समाप्त हो जाता है।

'अभंग गाथा' नाटक के दूसरे अंक के प्रथम दृश्य में फतेह खाँ उन्मनावस्था में नजर आता है। संत तुकाराम के अभंग सुनकर वह अच्छा होता है। तुकाराम उसकी सेवा करता है। दूसरे दृश्य का आरंभ जिजाई और भगीरथी के वार्तालाप से होता है। इनके बातचीत से दूसरे दृश्य का पर्दाफाश होता है। तीसरे दृश्य में तुकाराम और मंबाजी की अनबन होती है। मंबाजी और अन्य ब्राह्मण संत तुकाराम को पीटने का प्रयास करते हैं, तो तुकाराम के कीर्तनकार उसे बचाते हैं। मंबाजी के लोग मुस्लिम के दो लोगों की और अन्य की हत्या करते हैं। यह देखकर तुकाराम अन्याय को मिटाना चाहता है।

चौथे दृश्य में मंबाजी 'मंगला' नामक वीरांगना को तुकाराम को मोहमाया में फंसाने को कहता है। मंगला भक्ति में तल्लीन होकर 'सुंदर ते ध्यान उभे विटेवरी' अभंग गाती है। मंबाजी तुकाराम और मंगला को सरेआम बदनाम करना चाहता है। मंगला की भक्तिभावना के सामने उसकी एक नहीं चलती। पाँचवे दृश्य में दिखाया है कि रामेश्वर भट्ट और मंबाजी तुकाराम को हर तरह से तकलीफ देते हैं। वे तुकाराम की अभंग गाथाओं को पत्थर बांधकर उन्हें नदी में डूबो देता है और तुकाराम पर

संदर्भ

1. नया परिदृश्य, नरेंद्र मोहन के नाटक, सं. डॉ. गुरचरण सिंह भूमिका से (दस्तक)
2. नया परिदृश्य, नरेंद्र मोहन के नाटक, डॉ. गुरुचरण सिंह, पृ. 112
3. संत तुकाराम, ई-पुस्तकालय, विकिपीडिया
4. मराठी अभंग, तुकाराम, विकिपीडिया
5. तुकाराम गाथा, अभंग, विकिपीडिया
6. मराठी अभंग, तुकाराम, विकिपीडिया
7. नया परिदृश्य, नरेंद्र मोहन के नाटक, सं. डॉ. गुरचरण सिंह, पृ. 116
8. नया परिदृश्य, नरेंद्र मोहन के नाटक, सं. डॉ. गुरचरण सिंह, पृ. 126

Book

डॉ० धर्मवीर भारती : कथेत्तर गद्य साहित्यकार

डॉ. लक्ष्मी मनशेट्टी
एम.ए., सेट, नेट, पी-एच.डी. (हिंदी)

साहित्य सागर
कानपुर-208 011

ISBN : 978-93-93354-04-4

पुस्तक	:	डॉ० धर्मवीर भारती : कथेत्तर गद्य साहित्यकार
लेखिका	:	डॉ. लक्ष्मी मनशेट्टी
प्रकाशक	:	साहित्य सागर 128/23 आर रवीन्द्र नगर, यशोदा नगर, कानपुर Email : p.prakashan03@gmail.com sahityasagar03@gmail.com Mob. : 9450766327, 9005904629
संस्करण	:	प्रथम, 2022
©	:	लेखकाधीन
मूल्य	:	795/-
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	पूजा प्रिन्टर्स, कानपुर

अनुक्रम

1.	डॉ. धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	15
2.	डॉ. धर्मवीर भारती के निबंध-साहित्य	53
3.	डॉ. धर्मवीर भारती के यात्रा-साहित्य	88
4.	डॉ. धर्मवीर भारती के संस्मरणात्मक साहित्य	112
5.	डॉ. धर्मवीर भारती के सम्पादकीय लेख एवं पत्र-लेखन-साहित्य	136
6.	डॉ. धर्मवीर भारती के आलोचनात्मक एवं अनूदित साहित्य	165
	उपसंहार	189
	सहायक ग्रंथ सूची	203

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

जन्म	:	27 जुलाई 1973
शिक्षा	:	एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी., सेट
लेखन	:	विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 90 से अधिक शोधलेख प्रकाशित
प्रकाशित ग्रंथ	:	1. दक्खिनी हिंदी साहित्यकार मुल्ला वजही, 2. वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और हिंदी, 3. हिंदी में अनूदित भारतीय साहित्य, 4. अनुवाद की भाषा एवं शब्दावली, 5. पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद अंत: सम्बंध, 6. भाषा भाषांतर आणी शब्दावली, 7. अधुनातन हिंदी कहानी साहित्य, 8. अधुनातन हिंदी उपन्यास साहित्य, 9. ऐ इमानवालों
शोध परियोजना	:	(UGC) की 3 लघु शोध परियोजना पूर्ण करने के उपरान्त इन दिनों (२०१) की वृहद् शोध परियोजना पर कार्य जारी है।
सम्प्रति	:	हिंदी विभागाध्यक्ष एवं असोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नलदुर्ग, जि. उस्मानाबाद, महाराष्ट्र-413602
संपर्क	:	09421951786, 09049695786,
ई-मेल	:	drmirzahm@gmail.com
ब्लॉग	:	dakhiniparcham.blogspot.com
निवास	:	ताज अपार्टमेंट, 4 थी मंजिल, 284, शक्कर पेठ, सोलापुर-413005 (महा.)

अनुक्रम

• देवनागरी लिपि : उद्भव और विकास • देवनागरी लिपि : उद्भव और विकास • देवनागरी लिपि : उद्भव और विकास • नागरी लिपि के प्रयोग का विकास तथा विगत दस वर्षों में हुई प्रगति • उद्भव एवं विकास के परिप्रेक्ष्य में मोडी • देवनागरी लिपि : उद्भव और विकास • देवनागरी लिपि : उद्भव और विकास • देवनागरी लिपि और बंजारा बोली भाषा • कम्प्युटर और देवनागरी लिपि • कम्प्युटर और देवनागरी लिपि • कम्प्युटर, इंटरनेट और नागरी लिपि • संगणक एवं देवनागरी लिपि • कम्प्यूटर और देवनागरी लिपि • भाषायी एकता और नागरी लिपि • भाषायी एकता और राष्ट्रीय एकता में देवनागरी का योगदान • राष्ट्रीय एकता के लिए देवनागरी लिपि का योगदान • राष्ट्रीय एकता के लिए सार्थक लिपि देवनागरी • देवनागरी लिपि में सुधार की संभावनाएँ • देवनागरी लिपि में सुधार की संभावनाएँ • आधुनिक संदर्भ में नागरी लिपि • वैश्विकरण और नागरी लिपि।

₹ 495/-

ISBN : 978-93-82234-48-7

देवनागरी लिपि की प्रयोजनीयता ■ डॉ. हाशमबेग मिर्झा

देवनागरी लिपि की प्रयोजनीयता

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

प्रकाशक

साहित्य सागर

128/23 'आर' रवीन्द्र नगर

यशोदा नगर, कानपुर

*

ISBN : 978-93-82234-48-7

*

© लेखकाधीन

*

प्रथम संस्करण : 2018

*

मूल्य : 495/–

*

शब्द संयोजन :

रुद्र ग्राफिक्स

*

मुद्रक :

ग्लोबल प्रिंटिंग सर्विसेज, दिल्ली-110092

Devnagri Lipi Ki Prayojniyta

***by* : Dr. Hashambaig Mirza**

समर्पण

प्राचार्य डॉ. शहाबुद्दीन शेख

नागरी लिपि एवं हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए

जिन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित किया

13. संगणक एवं देवनागरी लिपि — 87
डॉ. विनोदकुमार वायचळ
14. कम्प्यूटर और देवनागरी लिपि — 91
डॉ. नागोराव बोईनवाड
15. भारत की अस्मीता : नागरी लिपि — 95
डॉ. अशोक मर्डे
16. भाषाई एकता और राष्ट्रीय एकता में देवनागरी का योगदान — 101
डॉ. रमेश कुरे
17. राष्ट्रीय एकता के लिए देवनागरी लिपि का योगदान — 110
डॉ. मल्लीनाथ बिराजदार
18. राष्ट्रीय एकता के लिए सार्थक लिपि देवनागरी — 115
डॉ. लक्ष्मी मनशेट्टी
19. देवनागरी लिपि में सुधार की संभावनाएँ — 120
डॉ. ठाकुर विजयसिंह
20. देवनागरी लिपि में सुधार की संभावनाएँ — 126
डॉ. रमेश आडे
21. आधुनिक संदर्भ में नागरी लिपि — 132
कु. नसरीन खमरोद्दीन काझी
22. वैश्विकरण और देवनागरी लिपि — 137
डॉ. संगीता सरवदे
संपर्क सूत्र — 143

1

देवनागरी लिपि : उद्‌भव और विकास

डॉ. सुरैय्या शेख

ब्राम्ही लिपि की उत्तरी शैली से चौथी शती में गुप्त लिपि और छटी शताब्दी में गुप्त लिपि से कुटिल लिपि विकसित हुई। इस कुटिल लिपि से आठवी–नववी शती में प्राचीन नागरी का विकास हुआ। दक्षिण भारत में इसे नंदी–नागरी कहते हैं। प्राचीन नागरी से अर्वाचीन, गुजराती, महाजनी, राजस्थानी, कैथी, मैथिली, असमिया, बंगला आदि लिपियाँ विकसित हुई। और पन्द्रहवी–सोलहवी शताब्दी में आधुनिक नागरी का जन्म हुआ। वैसे इसका विकास संपूर्ण भारत में पहले से ही था और आज भी है क्योंकि संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थ बौध्द तथा जैन धर्म के ग्रन्थ इसी लिपि में लिखे जाते थे। इसका सबसे प्राचीन रूप कनौज के प्रतिहार वंशी राजा महेन्द्रपाल के संवत 653 के दानपत्र में मिलता है। ग्यारहवी शताब्दी की नागरी आधुनिक नागरी से कुछ भिन्न थी । आज का रूप नागरी ने बारहवी शताब्दी मे धारण किया। कुछ विद्वानों के मतानुसार इसका जन्म दक्षिण में हुआ और बाद में प्रचार उत्तर में हुआ। आज ये भारत की प्रमुख लिपि है। हिंदी, मराठी, संस्कृत, नेपाली आदि मे इसका प्रयोग होता है।

डॉ. ओझाजी इसका आरम्भ आठवी सदी से मानते हैं। सातवी सदी में गुजरात के राजा जयभट्ट के शिलालेख में आठवी शती में चित्रकुट के राजाओं ने तथा नववी शती में बडोदा के ध्रुवराज ने अपनी राजाज्ञाओं में इसका प्रयोग किया। आज इसका प्रयोग उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान, गुजरात , महाराष्ट्र, नेपाल आदि में होता है। आज ये भारत की प्रमुख लिपि है। मराठी में इसे बालबोध कहा जाता है। देवनागरी की वर्णमाला ग्यारहवी शती में स्थिर हो गयी । आधुनिक नागरी की प्रवृत्ति जल्दी लिखने के लिए शिरोरेखा हटाने की रही है। [illegible] शती से गुजरात ने शिरोरेखा हटाकर

संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश का समस्त वाङ्मय इसी लिपि में है। अहिंदी राजभाषी भी चाहे हिंदी से अनभिज्ञ रहें, किन्तु संस्कृत के माध्यम से देवनागरी आदि से अधिकांश लोक परिचित रहते है। भारत की सांस्कृतिक एकता में देवनागरी का भारी योगदान हो सकता है और है। थोड़ा – बहुत परिवर्तन कर देने पर संसा की कोई भी भाषा इसके माध्यम से सफलता पूर्वक लिखि जा सकती है।

इसके वर्णों में रोमन वर्णों के समान छोटे–बड़े (कैपिटल और स्माल) वर्णों के अलग–अलग रूपों की उलझन नहीं है। इन विशेषताओं के कारण देवनागरी लिपि अत्यधिक वैज्ञानिक, सरल और देश की सांस्कृतिक परम्परा के अनूकूल है।

इस प्रकार किसी राष्ट्र की संस्कृति के अंतर्गत वहाँ के निवासियों की रहन–सहन, धर्म, भाषा, परंपरा आदि का समावेश होता है। हमारे देश का भौगोलिक विस्तार बहुत अधिक है। यहाँ अनेक धर्म, विभिन्न जातियाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ तथा भिन्न–भिन्न परंपराए पाई जाती है। किंतु इन विविधताओं के बीच भी ज्ञान, गुण संपन्न वैज्ञानिक लिपि देवनागरी के कारण एकता का सूत्र मौजूद है। हमें अपनी भाषा लिपि, धर्म, परंपरा आदि का अनुसरण करते हुए भारतीय संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए। यह हमारा पवित्र कर्तव्य है। आज देवनागरी को संपूर्ण भारत की एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण लिपि के रूपमें प्रतिष्ठा प्राप्त है, राष्ट्रीय एकता के लिए देवनागरी लिपि का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, इससे स्पष्ट है कि देवनागरी एक ऐसा विशाल वृक्ष है, जिसकी जडे अत्यंत मजबूत है, और प्राचीन भारतीय संस्कृति के अंतस्तलतक पहुँची हुओ है, और शाखाएँ 21 वी सदी के आसमान मे डोल रही है, आओ हम सब मिलकर इसे फैलाए और फुलाये और हृदय में बसायें, अन्तर्मन से प्यार करें जैसे –

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नही, वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश, स्वभाषा, स्वलिपि का प्यार नही।

❖

18

राष्ट्रीय एकता के लिए सार्थक लिपि : देवनागरी

डॉ. लक्ष्मी मनशेट्टी

भारत बहुभाषिक देश है इसी कारण भारत में एक से अधिक लिपियां प्रचलित हैं। भारत में भाषागत लिपिगत की विविधता पाई जाती है, शायद इसी कारण आज राष्ट्रीय एकता बनी हुई दिखाई देती है। इसके मुख्य आधार राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रभाषा के साथ–साथ राष्ट्रीय लिपि को माना जाता है। भारतीय संविधान के 343 अनुच्छेद के अनुसार देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि का दर्जा प्राप्त हो चुका है। इसे भारत की व्यापक तथा प्रमुख लिपि के रूप में अलग–अलग भाषा में साहित्य लिखा जाता है किंतु इन्हें एक सूत्र में बांधने का कार्य देवनागरी लिपि आसानी से कर रही है। भाषावार, प्रांतीयता के कारण आज प्रत्येक राज्य एक दूसरे से दूर जा रहा है। उनमें सांस्कृतिक, भावात्मक एकता बनाए रखने का कार्य देवनागरी लिपि के द्वारा किया जा सकता है। भारत में अनेक पंथ, धर्म, जाति, परंपरा, संस्कृति तथा भाषा होने के बावजूद भी इन में देवनागरी लिपि के माध्यम से एक सूत्र में बांधा जा सकता है। इसी कारण हमें देवनागरी लिपि राष्ट्रीय एकता में सार्थक दिखाई देती है।

भारत में देवनागरी लिपि को जानने वालों की संख्या सबसे अधिक मानी जाती है। उत्तर भारत का लगभग पूरा साहित्य देवनागरी लिपि में लिखित दिखाई देता है। साथही दक्षिण भारत में भी देवनागरी लिपि लोकप्रिय होती जा रही है। संस्कृत, नेपाली, हिंदी, मराठी, गुजराती आदि भाषाएं देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। साथही गुजराती, बांग्ला, असमिया, उड़िया, पंजाबी आदि भाषा की लिपि देवनागरी के समीप दिखाई देती है। अन्य भाषा का साहित्य भी देवनागरी में लिप्यंतरित या अनुवादित करने

वैज्ञानिक (लोकप्रिय) लिपि है। 5 देवनागरी लिपि आज ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से ही राष्ट्रीय एकता की आधार रहीं मानी जाती है। क्योंकि भारत का प्राचीन साहित्य (वेद) संस्कृत में लिखा हुआ है और संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। डॉ. इरफाक अली के अनुसार, देवनागरी अपने प्रचलन काल से ही राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान रही है, देवनागरी ने संपूर्ण राष्ट्र को राष्ट्रीय एकता की अस्मिता में बांधे रखा है। 6

देवनागरी लिपि ने प्राचीन काल से अपनी क्षमता सिद्ध की है। आज के वैश्वीकरण के युग में भी वह भारत की एकता को बनाए रखने में सक्षम कारगर सिद्ध होगी। आज हमें मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषा का ज्ञान होना अत्यावश्यक है क्योंकि जब तक हम भाषा का ज्ञान ग्रहण नहीं करेंगे कर सकेंगे तब तक हम में राष्ट्रीय एकता, सहिष्णुता तथा परोपकारी वृत्ति निर्माण नहीं हो सकेगी। देवनागरी लिपि के माध्यम से हम अन्य भाषाओं को आसानी से ज्ञात कर सकेंगे, जिससे राष्ट्रीय एकात्मता बढ़ जाएगी।

प्राचीन काल से संपूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने वाली इस लिपि को यूंही बनाए रखने के लिए हमें भी उसका प्रचार-प्रसार करना आवश्यक है। देवनागरी में लिखित मराठी, संस्कृत, नेपाली, हिंदी साहित्य काफी प्रसिद्ध दिखाई देता है। हिंदी भाषा तो आज विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा के पद पर आसीन होती हुई दिखाई देती है। इसका मूल कारण देवनागरी लिपि की लोकप्रियता मानी जा सकती है। नागरी लिपि राष्ट्रलिपि के साथ-साथ सामान्य लोगों की भी अपनी लिपि बन गई है। संपूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि अन्य राष्ट्रों में भी इस लिपि को प्रमुख रूप में अपनाया जा रहा है। देवनागरी लिपि राष्ट्रीय एकता के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय एकता बनाने की क्षमता रखती है।

अंत में,

अंत में इतना कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि ने राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इस लिपि के कारण प्रत्येक राज्य का, प्रत्येक भाषा का साहित्य एकत्र आने में सहायक सिद्ध हुआ है। राष्ट्रलिपि के रूप में इस लिपि में संपूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधकर रखने का उल्लेखनीय कार्य किया है और निरंतर कर रही है। इस लिपि के गुण-विशेषता के कारण वह राष्ट्रलिपि के साथ-साथ विश्व-लिपि भी बन सकती है। कुल मिलाकर हम, कह सकते हैं कि, देवनागरी लिपि का राष्ट्रीय एकता में विशिष्ट स्थान रहा है। अतः देवनागरी लिपि राष्ट्रीय एकता में पूर्णता सार्थक दिखाई देती है।

संदर्भ

1 हिंदी भाषा : अतीत से आज तक – डॉ. विजय अग्रवाल पृ. क्र. 150
2 देवनागरी लिपि – सं डॉ. शहाबुद्दीन शेख – पृ. क्र. 109
3 देवनागरी लिपि – सं डॉ. शहाबुद्दीन शेख – पृ. क्र. 103
4 देवनागरी लिपि – सं डॉ. शहाबुद्दीन शेख – पृ. क्र. 132 , 133
5 हिंदी भाषा संरचना – डॉ. उमेशचंद्र मिश्र – पृ. क्र. 95
6 देवनागरी लिपि – सं डॉ. शहाबुद्दीन शेख – पृ. क्र. 124

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

जन्म : 27 जुलाई 1973

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. , सेट

लेखन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 90 से अधिक शोधलेख प्रकाशित

प्रकाशित ग्रंथ

1. दक्खिनी हिंदी साहित्यकार मुल्ला वजही
2. वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और हिंदी
3. हिंदी में अनूदित भारतीय साहित्य
4. अनुवाद की भाषा एवं शब्दावली
5. पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद अंत: सम्बंध
6. भाषा-भाषांतर आणी शब्दावली
7. अधुनातन हिंदी कहानी साहित्य
8. अधुनातन हिंदी उपन्यास साहित्य
9. ऐ इमानवालों

शोध परियोजना : (UGC) की 3 लघु शोध परियोजना पूर्ण करने के उपरान्त इन दिनों (UGC) की बृहद् शोध परियोजना पर कार्य जारी है।

सम्प्रति : हिंदी विभागाध्यक्ष एवं असोसिएट प्रोफेसर
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नलदुर्ग, जि. उस्मानाबाद महाराष्ट्र-413602

संपर्क : 09421951786, 09049695786

ई-मेल : drmirzahm@gmail.com

ब्लॉग : dakhiniparcham.blogspot.com

निवास : ताज अपार्टमेंट, 4 थी मंजिल, 284, शक्कर पेठ, सोलापुर-413005 (महा.)

₹1150.00

ISBN 978-93-82234-46-3

9 789382 234463 >

साहित्य सागर

128/23 'आर' रवीन्द्र नगर

यशोदा नगर, कानपुर

महाराष्ट्र में हिंदी

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

महाराष्ट्र में हिंदी

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

महाराष्ट्र में हिंदी

डॉ. हाशमबेग मिर्झा

प्रकाशक
साहित्य सागर
128/23 'R' रवींद्र नगर, यशोदा नगर
कानपुर– 208 011
Mob. 9450766327, 9005904629
E-mail. p.prakashan03@gmail.com
E-mail. sahityasagar03@gmail.com

संस्करण : प्रथम, 2019

ISBN : 978-93-82234-46-3

मूल्य : 1150/–

शब्द सज्जा
रिचा ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक
साक्षी आफसेट, कानपुर

समर्पण

मेरे बड़े भाई
मिर्झा हाकिमबेग
और
बड़ी भाभी
सुलताना बेगम
को जिन्होंने अपने हिस्से की भूख को
मारकर मेरे शिक्षा की व्यवस्था की।

43.	हिंदी उपन्यास मे दलित दर्शन	डॉ. वडचकर एस.ए.	250
44.	प्रभाकर माचवे का हिन्दी साहित्य में योगदान	डॉ. शिवशेट्टे शंकर	253
45.	हिन्दी अनुवाद और वेदकुमार वेदालंकार	डॉ. विनोदकुमार वेदार्थ	257
46.	व्यंग्यकार डॉ. शंकर पुणतांम्बेकर	डॉ. बेवले असाराम	262
47.	दक्षिण के प्रवेश द्वार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे	डॉ. मनशेट्टी लक्ष्मी	266
48.	डॉ. जर्रा की कविताओं में व्यंग्य	डॉ. शिंदे किरण	272
49.	परिस्थिति से जूझता कवि डॉ. जर्रा काजी	डॉ. सय्यद शौकतअली	277
50.	महाराष्ट्र की हिन्दी पत्रिकाएँ	डॉ. मिरगणे अनुराधा	282
51.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास मे योगदान	डॉ. जगीर शेख	286
52.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास मे योगदान	डॉ. मालेगाव विश्वनाथ	291
53.	हिन्दी फिल्मों का हिन्दी के विकास में योगदान	डॉ. प्रमोद पाटील	295
54.	हिंदी फिल्मों का हिंदी के विकास मे योगदान	डॉ. रज्जाक शेख	299
55.	हिन्दी फिल्मो का हिन्दी के विकास में योगदान	डॉ. चव्हाण विश्वास	303
56.	प्रयोजनमूलक हिंदी के विकास में डॉ. देशमुख का योगदान	डॉ. बालाजी भुरे	307
57.	प्रयोजनमूलक हिन्दी में महाराष्ट्र के विद्वांनो का योगदान	डॉ. कोदुळे बायजा	316
	संपर्क सूत्र		326

1

संत साहित्य और भारतीय संस्कृति

डॉ. रूपाली चौधरी

संत जनों की धरती है भारत माता। इस धरती पर आकर दुःख से दूर करना जो बडे–बडे अवतरण इस संसार में हुए है और जो पैगम्बर आये, दार्शनिक आये, इन लोगों ने जो धर्म बनाये वो शुध्द धर्म थे। भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर जनसाधारण के दुःख दूर करने हेतु वे आए थे, समयाचार के हिसाब से धर्म बनाये गये। लेकिन बाद में एक नई पीढी तैयार हुई उसे कहते है– धर्म मार्तंडय। ये धर्ममार्तंडय जो भी कुछ इन महानुभावों ने कार्य किए उसके बराबर विरोध में खड़े हो गये। और जो बडे–बडे संत महाभूतियाँ इस संसार में आई और उन्होंने भी जो महान कार्य किए उन कार्यो को जब हम देखते है तो आश्चर्य होता है कि वह सब पैसा कमाने का एक धन्धा है। कवि जिब्राल बहुत बडे सन्त हो गये हैं। उन्होंने (धर्मभीरू के) उनके खिलाफ बहुत कुछ लिखा है। अनेक संत जो ससार में आए, उन्होंने सहज मार्ग अपनाया। ज्ञानेश्वर जी थे, ये हमारे यहाँ तुकाराम जी हो गये, हमारे यहाँ नामदेव हो गये, वैसे ही नानक जी हो गये, कबीरदास जी हो गये। इन लोगों ने संसार में रहकर लोगों की सेवा की। लोगों को धर्म सिखाया। लेकिन उन सबके साथ बहुत ज्यादती की। सबको इस तरह से सताया गया, मारा गया, पीटा गया। उन्हे खाने को भी नहीं दिया। भूखा रखा गया। हर देश में महान आत्मा हुए उन्हें जगाया नहीं गया तो उनको बदनाम किया गया। उन्हीं के नाम पर मन्दिर बनाये गये, बडी–बडी संस्थाएं बनाई गई और बहुत से कार्य हुए। परमात्मा का कार्य करनेवाली संस्थाएँ इस तरह से भगवान को भी बेचती है और धर्म को भी बेचती है। पैसा तो कमाती ही है, माफिया बनी हुई है। और ये सीधे साधे भोले लोग मन्दिरों में, चर्च में जाते हैं और सोचते हैं, यही परमात्मा है जिसने हमें बनाया, और उसी की भक्ति और श्रध्दा में हम लीन रहे। ऐसी एक से बढकर एक मौज हम देख सकते हैं, हम सबने नाथ द्वारा का नाम सुना होगा उस एक धर्म में एक से एक बढकर के धर्म मार्तण्ड बैठे हुए हैं जो कि माफिया है। आज जो अराजकता फैली हुई है, जिस तरह भ्रष्टाचार फैला हुआ है, जिस तरह से नैतिक मूल्य गिर गये है इन सबका इलाज एक ही है क्योंकि इसकी जड़ है मनुष्य। मनुष्य गिर गया इस वजह से सब चीजे गिर

47
दक्षिण के प्रवेश द्वार : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

डॉ. मनशेट्टी लक्ष्मी

संवैधानिक व्यवस्था के बाद भारत ने त्रिभाषा सूत्र को स्वीकार किया है। भारत के अधिकांश राज्यों में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था की गई है। भारत के महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में हिंदी में अध्ययन–अध्यापन जारी है। इससे हिंदीत्तर भाषा–भाषी छात्र भी हिंदी साहित्य का अध्ययन कर रहे हैं। महाराष्ट्र में भी आज हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में सर्वसंमत रूपसे स्वीकार किया गया हैं। महाराष्ट्र के संत–नामदेव, चक्रधर स्वामी, ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ, संत तुकाराम, समर्थ रामदास, संत गुलाबराय महाराज, स्वामी भोगानंद, संत तुकडोजी आदि ने मराठी के साथ–साथ हिंदी में भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। अर्थात, मध्यकाल से ही हिंदी साहित्य में महाराष्ट्र के साहित्यकारों का योगदान दिखाई देता है। महाराष्ट्र की भौगोलिक रचना भी इस तरह की है कि वह (महाराष्ट्र) उत्तर भारत और दक्षिण भारत के मध्य आता है। इसलिए इसे उत्तर तथा दक्षिण का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। जितने भी सूफी संत उत्तर से दक्षिण की ओर गए हैं, वे महाराष्ट्र से होकर गुजरे हैं। प्राचीन काल से ही महाराष्ट्र में राष्ट्रीयता की परम्परा दिखाई देती है। छत्रपति शिवाजी राष्ट्रीयता के द्योतक माने जाते हैं। महात्मा गांधी को सर्वाधिक अनुयायी महाराष्ट्र से ही मिले थे।

महाराष्ट्र को सामाजिक सुधार आंदोलन का केंद्र माना जाता है। महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, न्या. रानडे, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आदि महामानव महाराष्ट्र भूमि में जन्मे थे। आधुनिक काल में महाराष्ट्र में हिंदी का प्रचार–प्रसार अधिक हुआ। विनोबा भावे, आ. काका कालेलकर, दादा धर्माधिकारी, अनंत गोपाल शेवडे, मधुकरराव चौधरी हिंदी के प्रमुख प्रचारक माने जाते हैं। हिंदी प्रचार–प्रसार की यह परम्परा आज भी जारी है। आधुनिक युग में ऐसे भी कई महाराष्ट्र के साहित्यकार हैं जो हिंदी भाषा और साहित्य को समृध्द बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें अनंत गोपाल शेवडे, डॉ. शंकर पुणतांबेकर, श्रीमती

मालती परूलेकर, श्रीमती मालती जोशी, श्रीपाद जोशी, डॉ. दामोदर खडसे, आदि उपन्यासकारों का उल्लेख किया जाता है। महाराष्ट्र के आधुनिक कवि हैं– आसावरी काकडे, सुरेखा गोडबोले, प्रभाकर माचवे, वसंत देव, डॉ. र. शं. केलकर, भृंग तुपकरी, दिनकर सोनवलकर, निर्मला चौहान, डॉ. बलभीमराव गोरे, ओमप्रकाश शरीर, डॉ. काझी सत्तार जरी, डॉ. पद्मा पाटील महाराष्ट्र के कई कहानीकार हैं। जिनका हिंदी साहित्य को समृध्द कराने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें प्रमुख कहानीकार हैं– यमुना शेवडे, जोत्स्ना देवधर, विलास गुप्ते मुरलीधर जगताप, श्री गो. प. नेने, प्रभाकर माचवे। महाराष्ट्र के कुछ आलोचक भी हैं। जिन्होंने हिंदी आलोचना का क्षेत्र काफी विस्तृत किया है। इनमें प्रमुख महाराष्ट्र के कुछ हिंदी आलोचक भी हैं। इनमें प्रमुख आलोचक हैं– गजानन माधव मुक्तिबोध, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. चंद्रभानु सोनवणे, भगवानदास वर्मा, डॉ. अंबादास देशमुख, डॉ. अशोक कामत, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ. भ. ह. राजूरकर। महाराष्ट्र के साहित्यकारों ने अनुवाद विधा में भी अपना सराहनीय योगदान दिया है। डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, वेदकुमार वेदालंकार, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे डॉ. चंद्रभान सोनवणे, डॉ. सुनील कुमार लवटे, श्री. वसंत देव, डॉ. विद्या चिटको आदि महाराष्ट्र के प्रमुख अनुवादक माने जाते हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी, साहित्यशास्त्र में भी कई महाराष्ट्रीयन साहित्यकारों का योगदान रहा है।

हिंदी–साहित्य में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का योगदान

डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे का हिंदी साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान, संगठन, अनुवाद, आलोचना और कुछ मात्रा में सृजनात्मक लेखन आदि सभी क्षेत्रों को समृध्द किया हैं। उनका लेखन–कार्य अविरत गति से अब तक भी जारी है। उनका लेखन प्रगल्भ प्रतिभा एंव सामाजिक अनुभूति की यात्रा है। इनके संबंध में डॉ. अंबादास देशमुख लिखते हैं– "एक सशक्त लेखक के रूप में व हिंदी संसार में प्रस्तुत हुए हैं। डॉ. रणसुभे की साहित्यक काव्य कृतियों में उनके मानवीय दृष्टिकोण एवं उनके विचारो की गहराई तक पहुँचकर एक संवेदनशील कलाकार के मासूमियत भरे दिल की धडकन को पहचानना है तो उनके जीवन से जुडी बातों को जानना जरूरी है।"[1] डॉ. रणसुभे का लेखन विविधात्मक है। वे एक महान युगदृष्टा माने जाते हैं।

डॉ. रणसुभे का जीवनवृत्त : डॉ. रणसुभे ने हिंदी साहित्य जगत में यशस्वी चहल कदमी करते हुए अपने अस्तित्व की अमिट छाप छोड़ी है। तथा अपनी एक अलग पहचान बनायी है। उनका जन्म 7 अगस्त, 1942 को पुराने हैदराबाद रियासत के जिला गुलबर्गा में हुआ। वहाँ की एक श्रमिक बस्ती में उनका जन्म हुआ, वहीं उनका बचपन व्यतीत हुआ। प्राथमिक शिक्षा से लेकर

अमानवीय व्यवहार है इसका दर्पण यह आत्मकथा है।"[6]

डॉ. रणसुभे ने अक्करमाशी (शरण कुमार लिंबाले) का भी अनुवाद किया है। उन्होंने 'अक्करमाशी' शब्द हिंदी में रूढ़ किया। जिसका अर्थ है– अवैध संतान। एस. जे. गायकवाड के अनुसार– "यह दलित आत्मकथा समग्र मनुष्य जीवन को दहला देनेवाली आत्मकथा हैं। इसमें सवर्ण और अवर्ण जाति के स्त्री पुरुष के अवैध संबंधों से जन्मी संतान शरणकुमार लिंबाले का समस्या ग्रस्त जीवन अभिव्यक्त हुआ है।"[7] इस अनूदित कृति द्वारा अनौरस संतति की समस्या को दर्शाया गया है। रणसुभे जी ने उठाईगीर (लक्ष्मण गायकवाड) इस आत्मकथा का भी 'उचक्का (उचल्या)' नाम से अनुवाद किया है। इसमें समाजव्यवस्था एवं वर्णव्यवस्था से पीड़ित मनुष्य जीवन का अंकन है। इसमें मानव जीवन की त्रासदी को अंकित किया गया हैं। एक पीड़ित कार्यकर्ता की संघर्षमयी गाथा को व्यक्त किया गया हैं। लक्ष्मण गायकवाड के अनुसार– "यह आत्मकथा वास्तव में एक कार्यकर्ता का मुक्त चिंतन है। इस कारण इस आत्मकथा का साहित्यिक मूल्यांकन करने की अपेक्षा समाजशास्त्रीय मूल्यांकन हो यह अपेक्षा है।"[8]

डॉ. रणसुभे ने आत्मकथा के अलावा 'साक्षीपुरम' नाटक, छः दलित कहानियाँ, 'हिंदू' नामक उपन्यास तथा अन्य वैचारिक लेखन आदि का भी हिंदी में अनुवाद किया है। इस प्रकार रणसुभे जी ने अनुवाद को साधना के रूप में स्वीकार किया है। इसी साधना के बदौलत उनका अनुवाद सफल रहा है। अतः रणसुभे जी को एक सफल अनुवादक माना जा सकता है।

आलोचक : डॉ. रणसुभे : आलोचना के क्षेत्र में रणसुभेजी का नाम सराहनीय माना जाता है। आलोचना लेखन से उनकी प्रतिभा, अध्ययनशीलता, तथा मौलिक समीक्षा–दृष्टि के दर्शन होते हैं। उन्होंने सात रचनाओं की आलोचना की हैं– कहानीकार कमलेश्वर : संदर्भ और प्रकृति, 'कहानीकार अज्ञेय : संदर्भ और प्रकृति, हिंदी उपन्यास : विविध आयाम, देश विभाजन और हिंदी कथा–साहित्य, हिंदी साहित्य का अभिनव इतिहास, साहित्यशास्त्र तथा आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास।

'कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति' में रणसुभेजी ने कमलेश्वर की बारह कहानियों की आलोचना की है। 'कहानीकार अज्ञेय संदर्भ और प्रकृति' में अज्ञेय जी की कहानियों की आलोचना की हैं। 'हिंदी उपन्यास विविध आयाम' में हिंदी की महत्वपूर्ण सोलह उपन्यासों पर आलोचना की है। 'देश विभाजन और हिंदी कथा–साहित्य' में रणसुभे जी ने देश विभाजन से संबधित जो कथा साहित्य लिखा गया है, उस पर अपने अलोचनात्मक विचारों को स्पष्ट किया है। 'साहित्यशास्त्र' में भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र की अवधारणा को व्यक्त किया गया है। 'विभाजन' में रीतिकाल के विभाजन–रीतिबध्द, रीतिसिध्द रीतिमुक्त–पर आपने आलोचनात्मक विचार रखे है। 'आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास' यह भी रणसुभे की आलोचनात्मक कृति है। इस कृति के बारे में डॉ. रणसुभे लिखते हैं– "अपनी मातृभाषा की आधुनिक प्रवृत्तियों का परिचय राष्ट्रभाषा के अध्येयताओं को करा देने के उद्‌देश्य से ही यह प्रवृत्ति लिखी है।"[9] इन कृतियों से स्पष्ट होता है कि अलग–अलग विषयों पर रणसुभे जी ने लेख लिखा है। इससे उनकी आलोचना दृष्टि देखने को मिलती है। जिससे उन्हें एक लोकप्रिय आलोचक माना जा सकता है।

रणसुभेजी ने वैचारिक लेखन, फुटकल लेखन, सृजनात्मक लेखन तथा सम्पादन लेखन भी किया है। इससे उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय मिल सकता है।

निष्कर्ष : यह कहा जा सकता है कि, रणसुभेजी ने जो भी लेखन कार्य किया हैं वह मौलिक तथा उद्‌देश्यपूर्ण रहा है। वैचारिक लेखन, आलोचना लेखन, सृजनात्मक लेखन, सम्पादन लेखन में वे अपना एक अलग स्थान रखते हैं। उन्हें सबसे अधिक लोकप्रियता अनुवादक के रूप में प्राप्त हुई है। उनके द्वारा अनूदित कृतियो ने उपेक्षित जाति के दुःख, दर्द समाज के सम्मुख रख दिया है। महाराष्ट्र के हिंदी में उनका सराहनीय योगदान रहा है। उन्हें हिंदी की सबसे बड़ी उपलब्धि कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रशंसनीय रहा है। उन्हें दक्षिण के प्रवेश द्वार कहा जाता है।

संदर्भ

1. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व– डॉ. मजीद शेख, डॉ. अंबादास देशमुख की भूमिका से
2. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. मजीद शेख – पृ. 21
3. वही, पृ. 31
4. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे – भूमिका से
5. गौरव ग्रंथ' प्रा. डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, [illegible] चिंतन वीथियाँ – डॉ. सुरेश माहेश्वरी – पृ. 25
6. हिंदी में अनूदित भारतीय साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) से, डॉ. सन्मुख नागनाथ मुच्छटे का लेख, पृ. 38
7. वही, पृ. 172
8. उचक्का (लक्ष्मण गायकवाड) अनुवाद डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे – लक्ष्मण गायकवाड की भूमिका से
9. आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास–डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, पृ. 5